चतुर्थः पाठः

भारतदेशः

[प्रस्तुत शीर्षक 'भारतदेशः' विष्णुपुराण से उद्धृत है। इन श्लोकों के माध्यम से भारतदेश की महिमा का वर्णन किया गया है। देवता भी इस आशय के गीत गाते हैं कि भारतभूमि धन्य है। जो पुरुष इस भारतभूमि में जन्म लेता है, वह धन्य है। स्वयं विष्णु भगवान समय-समय पर मानव शरीर धारण कर इसी भारतभूमि में प्रकट होते रहे। अतः देवता मोक्ष की कामना से ईश्वर से प्रार्थना करते हैं कि भगवान्, यदि हमारे कोई पुण्य हों तो हमारी कामना भी पूरी करें ताकि भारत की भूमि में जन्म लेकर हम अपने भाग्य की सराहना करते हुए मोक्ष प्राप्त कर सकें। प्रस्तुत पाठ में ईश्वर से प्रार्थना की गयी है।]

गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।१।।

कर्माण्यसंकल्पिततत्फलानि, संन्यस्य विष्णौ परमात्मभूते।
अवाप्य तां कर्ममहीमनन्ते, तस्मिंल्लयं ते त्वमलाः प्रयान्ति।।२।।

अहो भुवः सप्तसमुद्रवत्याः, द्वीपेषु वर्षेष्वधिपुण्यमेतत्।
गायन्ति यत्रत्यजनाः मुरारेर्भद्राणि कर्माण्यवतारवन्ति।।३।।

अहो अमीषां किमकारि शोभनं, प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः।
यैर्जन्मं लब्धं नृषु भारताजिरे, मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहाहि नः।।४।।

कल्पायुषां स्थानजयात् पुनर्भवात्, क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।
क्षणेन मर्त्येन कृतं मनस्विनः संन्यस्य संयान्त्यभयं पदं हरेः।।५।।

यद्यस्ति नः स्वर्गसुखावशेषितं, स्विष्टस्य सूक्तस्य कृतस्य शोभनम्।
तेनाजनाभे स्मृतिमज्जन्म नः स्यात्, वर्षे हरिर्यद् भजतां शं तनोति।।६।।

सञ्चितं सुमहत् पुण्यमक्षय्यममलं शुभम्।
कदा वयं नु लप्स्यामो जन्म भारतभूतले।।७।।

सम्प्राप्य भारते जन्म सत्कर्मसु पराङ्मुखः।
पीयूषकलशं हित्वा विषभाण्डं स इच्छति।।८।।

अभ्यास-प्रश्न

१. निम्नलिखित श्लोकों की ससन्दर्भ हिन्दी में व्याख्या कीजिए–

(क) कर्माण्यसंकल्पिततत्फलानि, संन्यस्य विष्णौ परमात्मभूते।
अवाप्य तां कर्ममहीमनन्ते, तस्मिंल्लयं ते त्वमलाः प्रयान्ति।।

(ख) अहो अमीषां किमकारि शोभनं, प्रसन्न एषां स्विदुत स्वयं हरिः।
यैर्जन्मं लब्धं नृषु भारताजिरे, मुकुन्दसेवौपयिकं स्पृहाहि नः।।

(ग) कल्पायुषां स्थानजयात् पुनर्भवात्, क्षणायुषां भारतभूजयो वरम्।
क्षणेन मर्त्येन कृतं मनस्विनः संन्यस्य संयान्त्यभयं पदं हरेः।।

२. निम्नलिखित श्लोकों का अर्थ संस्कृत में लिखिए–

(क) गायन्ति देवाः किल गीतकानि, धन्यास्तु ये भारतभूमिभागे।
स्वर्गापवर्गास्पदहेतुभूते, भवन्ति भूयः पुरुषाः सुरत्वात्।।

(ख) सञ्चितं सुमहत् पुण्यमक्षय्यममलं शुभम्।
कदा वयं नु लप्स्यामो जन्म भारतभूतले।।

(ग) सम्प्राप्य भारते जन्म सत्कर्मसु पराङ्मुखः।
पीयूषकलशं हित्वा विषभाण्डं स इच्छति।।

३. सन्धि-विच्छेद कीजिए–
भद्राण्यवतारवन्ति, यद्यत्र, स्मृतिमज्जन्म।

४. समास-विग्रह कीजिए तथा समास का नाम बताइये–
भारतभूमिभागे, स्वर्गसुखावशेषितम्।

➨ आन्तरिक मूल्यांकन

आपकी दृष्टि में भारत की क्या विशेषताएँ हैं?

●●●